अकाल तख्त की यह ललकार
साबत सुरत सिर दसतार
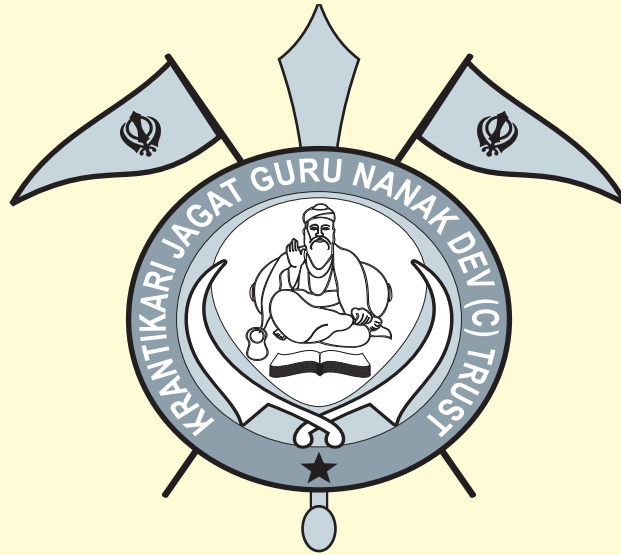
लेखक : स. जसबीर सिंघ

क्रांतिकारी गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़
Website : www.sikhworld.info

साबुत सूरति दसतार सिरा
न्यारा खालसा – संत सिपाही

सिक्ख युवकों की समस्याओं पर विचार गोष्ठी एवं उनका समाधान

लेखक : जसबीर सिंघ

क्रांतिकारी जगद् गुरूनानक देव चेरीटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़
दूरभाष : 0172 – 2696891 मोबाइल : 9988160484

समीक्षा

श्रद्धा और ज्ञान दोनों अलग-अलग विषय हैं । सिक्ख लोगों में श्रद्धा की कमी नहीं परन्तु सिक्ख ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा नहीं रखते, जबकि उनके अस्तित्व का कारण ज्ञान प्राप्त करना ही था क्योंकि सिक्ख श्ब्द का अर्थ विद्यार्थी है । उनके गुरू (आध्यात्मिक ज्ञान के भण्डार) श्री गुरू ग्रंथ साहब हैं परन्तु वर्तमान समय में केवल एक प्रतिशत सिक्ख ही गुरू ग्रंथ साहब की वाणी सीधे रूप में ग्रंथ साहब में से पढ़ते हैं बाकी केवल माथा टेक कर अपने को धन्य समझने लगते हैं । शायद इसीलिए अज्ञानता के कारण धीरे धीरे सिक्ख लोग पतन की तरफ बढ़ते ही चले जा रहे हैं क्योंकि केवल श्रद्धा के बल पर सिक्खी कब तक टिकेगी । वास्तव में श्रद्धा और ज्ञान का सुमेल होना अनिवार्य है क्योंकि ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं बिल्कुल वैसे ही जैसे किसी व्यक्ति के पास कम्प्यूटर हो परन्तु उसे प्रयोग करने का ज्ञान न हो, दूसरी तरफ किसी व्यक्ति के पास कम्प्यूटर चलाने की डिग्री हो परन्तु उसके पास कम्प्यूटर न हो तो ऐसी अवस्था में दोनों असफल हैं इसी प्रकार सिक्ख लोगों की असफलता का कारण ज्ञान और श्रद्धा का सुमेल का न होना है ।

वाहिगुरू जी का खालसा
वाहिगुरू जी की फतहि

भूमिका

प्रवक्ता – एक युवक से – बेटा जी ! आप पगड़ी क्यों नहीं बाँधते । युवक – देखिये ज्ञानी जी, क्या यह कम है कि मैं पूर्ण स्वरूप में सिक्ख हूँ, कहीं कोई केशों को खंडन (काटने) करने की बेअदबी नहीं की हुई । यदि मैं पगड़ी नहीं बाँध सकता तो क्या बिगड़ जाता है ? आप बार बार मुझे पगड़ी बाँधने के लिए बाध्य न किया करें ।

प्रवक्ता – मैं गुरूदेव द्वारा भेजा गया उनका प्रतिनिधि हूँ । मैं अपनी तरफ से कुछ भी नहीं कहता, जो गुरूदेव का हुक्म है उसे ही बार बार सुनाता हूँ । गुरूदेव का कहना है आप मेरे संत सिपाही पुत्र है आप को न्यारे बाणे (वर्दी) में रहना चाहिए, यानि – साबुत सूरत दसतार सिरा – इसीलिए मैंने आपको उनका संदेश बार बार सुनाया है कि प्रत्येक सिक्ख को सर्वप्रथम पगड़ी धारण करनी अनिवार्य है क्योंकि इसके पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य छिपा हुआ है । यदि कोई किसान खेती बीजे परन्तु उसकी रक्षा हेतु बाड़ इत्यादि की व्यवस्था न करे तो स्वभाविक है कि समय मिलते ही उस खेती को पशु चारा बनाकर बर्बाद कर देंगे । अत: ठीक इसी प्रकार शत्रु पक्ष हमारी इस कमजोरी को भांप कर उसका अनुचित लाभ उठाता हुआ, हमारे हृदय में बातों ही बातों में हीन भावनाएं भरने में सफल हो जाते हैं । जिसका परिणाम यह होता

है कि बहुत से युवक आपके सामने ही पतित (केशो रहित) हो चुके दिखाई देते हैं ।

अत: युवकों ! मैं आपको एक दुखांत घटनाक्रम यहाँ सुनाना आवश्यक समझता हूँ । पिछले दशक 1998 ईस्वी में स्पोक्समैन मासिक पत्रिका में एक लेख छपा था, जिसका सारांश इस प्रकार है – सिक्ख परिवार की एक युवती पाकिस्तान के लाहौर नगर से ब्रिटिश ऐम्बैसी की किसी प्रकार सहायता प्राप्त कर वापस लंदन पहुँची । उसने वहाँ के स्थानीय सिक्ख समुदाय को बताया कि पाकिस्तान के विभिन्न नगरों में लगभग 350 सिक्ख परिवारों की लड़कियाँ वेश्यावृत्ति के लिए विवश कार्यरत हैं । उन सभी को मेरी तरह पाकिस्तानी युवकों ने यहाँ लंदन से बहला-फुसला कर निकाह का वायदा करके पाकिस्तान पहुँचा दिया और वहाँ उनको बेच दिया गया । स्थानीय पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उस महिला ने बताया कि यहाँ लंदन में पाकिस्तानी पंजाबियों ने एक सोसाईटी का गठन किया हुआ है, जिसका एकमात्र लक्ष्य सिक्ख युवतियों को पाकिस्तानी बाजारों में बेचना है । इस कार्य के लिए वे अपने युवकें को एक विशेष प्रकार का प्रशिक्षण देते हैं जिसमें युवतियों का मन जीतने की विधियाँ और बन-ठन कर रहने की कला से लेकर चरित्रवान (परेजगार) होने की अभिनय (कला) तक सिखाई जाती है । इसके अतिरिक्त एक विशेष राशि लड़की को पटाने के लिए उन युवकों को दी जाती है । यह राशि लड़का खुलकर लड़की पर खर्च करता है जो लड़की के बिक जाने पर सोसाईटी को लौटानी होती है । बाकी की राशि उस युवक को पुरस्कार रूप में मिल जाती है । पत्रकारों का प्रश्न था कि सिक्ख लड़कियों को मुस्लिम लड़के ही क्यों भाते थे, क्या सिक्ख युवकों की कमी थी, इस पर युवती ने उत्तर दिया कि पहले तो सिक्ख युवतियों को सिक्ख सभ्यता और गुरू मर्यादा का बिल्कुल ज्ञान नहीं रहता था, दूसरा सिक्ख युवक अपने व्यक्तित्त्व पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते, वे कुरीतियाँ करते हैं जिससे वे भद्दे दिखाई देते हैं यानि वे न पगड़ी बांधते हैं न दाढ़ी मूँछे गुरू मर्यादा अनुसार श्रृंगारते हैं जिससे वे करूप दिखाई देते हैं । इसके अतिरिक्त वे परेज़गार तो बिल्कुल भी नहीं रहे जबकि मुस्लिम युवक शुद्ध पँजाबी भाषा बोलने वाला परेज़गार होते थे क्योंकि उनको इस विषय में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त होता था ।

इस पर पत्रकारों ने प्रश्न किया – मुस्लिम युवतियों को बदले में सिक्ख युवक अगवा कर सकते थे । उस युवती ने उत्तर दिया – पाकिस्तानी लोग अपनी बहू-बेटियों को यहाँ पर भी पर्दो में ही रखते हैं । वे सिक्ख स्त्रियों की तरह स्वतन्त्र नहीं हैं ।

जितना बड़ा सरदार, उतनी ही बड़ी दसतार

दसतार फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है – पगड़ी । पगड़ी भारतवर्ष में राष्ट्रीय पोशाक का अभिन्न अंग स्वीकारा गया है । भारत के विभिन्न प्रांतों में पगड़ी बांधने का अंदाज भले ही अलग अलग है परन्तु सभी लोग पगड़ी धारक को एक बहुत मान्यवर व्यक्ति मानकर आदर की दृष्टि से देखते हैं । पगड़ी व्यक्ति विशेष का ताज माना जाता है और पगड़ी उस व्यक्ति की शोभा को चार चाँद लगा देती है ।

इस आधुनिक युग में अधिकांश भारतीयों ने पगड़ी पहनना त्याग दिया है जबकि सिक्ख जगत में पगड़ी उनकी पोशाक का अनिवार्य अंग है क्योंकि पगड़ी सिक्ख आस्था के अनुसार उनके अलग स्वरूप को समस्त विश्व में एक विशेष पहचान दिलवाती है । सिक्ख आचार संहिता (रहित मर्यादा) के अनुसार समस्त सिक्ख जगद् को गुरू आदेश है कि वे न्यारे स्वरूप में रहें अर्थात 'साबुत सूरति दसतार सिरा'

जब लग खालसा रहे न्यारा । तब लग तेज दीओ मैं सारा ।
जब इह गहै विपरन की रीति । मैं न करूं इन की प्रतीति ।

वर्तमान समय में कुछ एक सिक्ख युवक दसतार (पगड़ी) बाँधने में आलस्य करते हैं । अत: वे अपने बालपन में प्रयोग में लाई जाने वाली विधि 'पटका' ही बाँध कर अपने केशों और जूड़े को ढ़कते हैं जो कि उनकी सुन्दरता और गौरव को बहुत भारी ठेस पहुँचाता है । ऐसा करने से जहाँ गुरू आदेशों का उल्लंघन होता है वहीं सिक्ख समाज में कुरीतियां फैलती ही जाती हैं । जिसका अन्त पतितवाद में बदलता जाता है । अत: इस समस्या का समाधान समय रहते सिक्ख जगत को सावधान करने में ही है ताकि माता पिता कहीं भी ढीलापन न दिखावें, नहीं तो उनके घर से सिक्खी स्वरूप धीरे धीरे लुप्त हो जायेगा । जिसके दोषी वे स्वयँ ही होंगे क्योंकि यदि हम ग़फलत की नींद सोते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी युवा पीढ़ी हम से बागी हो जायेगी । इन सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध जागृति लाने के उद्देश्य से उन सिक्ख युवकों की सभा बुलाई गई जो पगड़ी के स्थान पर पटका बांध कर समय व्यतीत करते रहते हैं अथवा एक छोटा सा कपड़ा जो कि टोपीनुमा होता है बांध कर ढोंग रचते रहते हैं । वास्तव में हमारा मुख्य लक्ष्य था युवकों की समस्यायें सुनकर, उनका समाधान खोजना और युवकों का उचित मार्गदर्शन करना ।

इस सभा में लगभग बीस लोगों ने भाग लिया । उनमें 16 से 20 वर्ष की आयु के युवकों ने स्पष्ट स्वीकार किया कि वे पगडी बांध ना नहीं जानते परन्तु धीरे धीरे सीखने का प्रयत्न कर रहे हैं । इस पर सभा के आयोजक महोदय ने कहा – प्यारे जवानों, जब मैं किशोर अवस्था का हुआ तो मेरे पिता जी ने एक साधारण सा धार्मिक कार्यक्रम घर पर करवाया और अरदास के उपरान्त मुझे ग्रंथी सिंह जी ने पगड़ी बाँधने की ओपचारिकता सम्पूर्ण कर दी । मैं उन दिनों छठी कक्षा का विद्यार्थी था । उस दिन से आज तक मैंने फिर कभी पगड़ी के बिना घर से बाहर कदम नहीं रखा । मैं प्रतिदिन सुबह पगड़ी बाँधता और स्कूल जाता । पहले पहल पगड़ी कुछ टेढ़ी-मेढ़ी ही बंधती थी परन्तु धीरे धीरे मेरा अभ्यास बढ़ता ही गया और पगडी अति सुन्दर बांधने लगा । वास्तव में मेरे हृदय में पगड़ी बांधने में रूचि थी और मैं पगड़ी का आशिक भी था । 'जहाँ चाह वहाँ राह' की कहावत अनुसार कुछ ही दिनों में, मैं अपने सहपाठियों में सबसे सुन्दर और आकर्षक पगड़ी बांध ने के लिए प्रसिद्ध हो गया। उन्हीं दिनों मुझे स्थानीय गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा पगडी बांधने की प्रतियोगिता में पुरस्कृत किया गया। वास्तव में मेरे में एक विशेष प्रतिभा थी जिस के बल पर मैं सबसे कम समय में सुन्दर पगड़ी बांधने का रिकार्ड स्थापित कर सका। प्रत्यक्ष को प्रमाण

की आवश्यकता नहीं होती । अत: मैं आज इस समय आपके सम्मुख कम से कम समय में सुन्दर और आकर्षक पगड़ी बांधने का प्रदर्शन करूँगा ।

प्रवक्ता - इस समय स्थानीय गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के मुख्य सदस्य महोदय भी यहाँ विराजमान हैं, अत: आप सभी का हार्दिक स्वागत है, मैं इस समय गुरू मर्यादा अनुसार अपनी पगड़ी आपके समक्ष खोलने का प्रदर्शन कर रहा हूँ । एक बात सभी युवक समझ लें, जिस प्रकार एक एक लड़ चुन चुन कर बांधने का हुक्म है, ठीक उसी प्रकार पगड़ी उतारने का भी विधान है । पगड़ी को एक ही झटके से टोपी की तरह नहीं उतारा जाता, जैसे एक-एक लड़ बांधा जाता है, ठीक उसी प्रकार एक एक लड़ खोला भी जाता है ।

अब मैं पगड़ी को झाड़ता हूँ । उसके पश्चात् बिना पूनी किये, बिना पानी के छिड़काव के, बिना किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता लिए भावार्थ बिना खींचातानी के पगड़ी बांधना प्रारम्भ करता हूँ । आप अब घड़ी पर समय देखलें । इससे पहले की मैं पगड़ी बाँधू । मैं सर्वप्रथम केशों में कंघा करूँगा और जूड़ा सिर के मध्य में बांधूगा क्योंकि मस्तिष्क पर 'केशकी' अर्थात छोटी दसतार बांधी जा सके जो कि बाद में आप को 'फिफ्टी' के रूप में दिखाई देगी । अब मैं पगड़ी का एक कोना लेकर ठोडी के नीचे दबाकर पगड़ी बांधना प्रारम्भ करता हूँ । आप देख रहे हैं, मैंने इस में कहीं कोई तह इत्यादि नहीं लगाई ना ही कोई गांठ लगा कर लड़ छोटे बड़े हो जाने का भय पाला है । मैंने पगड़ी की लम्बाई आवश्यकता से एक फीट अधिक रखी है । जिससे पगड़ी का अन्तिम छोर कभी भी कम या छोटा नहीं हो सकता, रही बात पगड़ी के बढ़ जाने की तो उसका अन्तिम बचा हुआ छोर पगड़ी के भीतर ही दबा दिया जायेगा। मैं आपके सामने बिना रूके पगड़ी लपेटता (बांध ता) ही चला जा रहा हूँ क्योंकि मुझे पूर्ण विश्वास है कि किसी भी लड़ को सजाने की आवश्यकता नहीं, अन्त में जब पगड़ी सम्पूर्ण होगी तो सुन्दर रूप दे दिया जायेगा तो लीजिए पगड़ी को अन्तिम स्वरूप दे दिया गया है । अब मैं इसमें आवश्यकता अनुसार आलपिन लगा रहा हूँ और पगड़ी को थोड़ा सा सिर पर ही घुमा कर आवश्यकता अनुसार केन्द्र में ला रहा हूँ । अब आप फिर से घड़ी देखें, क्योंकि पगड़ी बंध कर तैयार हो गई है । देखिए केवल पाँच मिनट ही हुए हैं जो कि बहुत ही उचित समय है । आप सब को कई प्रकार (डिजाईनों) की पगड़ी बांधना सीखना चाहिए ताकि समय पड़ने पर आवश्यकता अनुसार उनका सदुपयोग किया जा सके ।

अब मैं उन युवकों से प्रश्न करूँगा, जो पगड़ी के स्थान पर छोटी सी पट्टी जूड़े पर बांध कर पगड़ी बांधने का ढोंग रचकर मन में भ्रम पाले बैठे हैं कि उनको सिक्ख समाज स्वीकार कर रहा है । मेरे समक्ष बैठे हुए युवक - आप ही बताएं कि आपने पगड़ी क्यों नहीं बांध ी ?

युवक - 'केशकी' अथवा पटका भी सिर ढ़कने का साधन है । मुझे पगड़ी बांधने में समय अधिक लगता है । अत: मैं जल्दी तैयार होने के लिए यह सरल विधि अपना लेता हूँ ।

प्रवक्ता - बेटा जी, यदि समस्त सिक्ख जगद् के युवक तेरी तरह जूड़े पर पट्टी बांध कर पगड़ी होने का भ्रम पाल ले तो आने वाले समय में तो हमें पगड़ी वाले सिक्ख दिखाई ही नहीं देंगे । रही बात देरी की तो जो व्यक्ति अभ्यास करेगा स्वाभाविक है, वही उस कार्य में दक्ष बन जायेगा। प्रत्येक कार्यो की सफलता के पीछे उस व्यक्ति की लगन और कड़ा परिश्रम झलकता दिखाई देता है । आप करते कुछ भी नहीं केवल आलस्य में जीवन जीना चाहते हो और प्राप्तियों की आशा भी रखते हो, इसलिए आपके व्यक्तित्व पर आप की आलस्यवाद का गहरा धब्बा लगा रहा है, जबकि आप एक बांके छैल छबीले युवक हो । यदि शक है तो अपनी पगड़ी वाली तस्वीर और पट्टी बांधी तस्वीर की तुलना स्वयं ही कर लें ।

मैं यहाँ समस्त युवकों को सम्बोधन करके कह रहा हूँ कि आपमें से किसी ने भी सन्यास नहीं लिया हुआ, आप सभी सभ्य समाज के अंग हैं, जिन्हें जीवनचर्या के लिए अपने आप को सुन्दर बनाकर रखना चाहिए ताकि आपको देखकर अन्य मतावलम्बी सहज ही कहे कि सिक्ख युवकों की व्यक्तित्व देखते ही बनता है परन्तु यहाँ उल्टी घटना घटित हो रही है । मुझे कुछ एक किस्से सुनने को मिले हैं कि सिक्ख युवतियों ने सिक्ख युवकों को नकार दिया और कहा - इनका व्यक्तित्व अच्छा नहीं और रिश्ता-नाता करने से साफ इन्कार कर दिया । वास्तव में बात सच्ची थी क्योंकि सिक्ख युवक गुमराह हो गये हैं, वे अपने पर ध्यान केन्द्रित नहीं करते । पगड़ी तो बांधते ही नहीं केवल पटका बांध कर समय व्यतीत करते हैं जबकि वे पूर्ण यौवन पर हैं । उनके चेहरे पर पूर्ण रूप से दाढ़ी-मूँछ आ चुकी हैं । यदि वे चाहे तो अपने व्यक्तित्व विकास के लिए दाढ़ी को कई विधियों द्वारा बांध सकते हैं इसके लिए आजकल फिक्सो, जैली, ड़ोरी तथा जाली इत्यादि प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध हैं । यदि दाढी खुली रखकर (प्रकाश करना) चाहे तो अति सुगंधित मनमोहक तेल इत्यादि प्रयोग में लाये जा सकते हैं परन्तु अधिकांश सिक्ख युवक दाढ़ी का गुरू हुक्मों के विपरीत अपमान करते देखे जाते हैं । जिससे उनकी दिखावट एक मुन्नी हुई भेड के रूप में भद्दी दिखाई देती है । रही बात पगड़ी की तो कुछ युवक केवल दिखावे के लिए एक छोटी सी गोल 'केशकी' रूप में पटका बांध लेते हैं जो कि अमृतधारी सिक्ख स्त्रियों के केश बांधने के लिए प्रयोग में लाई जाती है क्योंकि उन्होंने सिर पर उस केशकी के ऊपर दुपट्टा अथवा चुन्नी धारण करनी होती है । युवकों का शरीर हृष्ट-पुष्ट होने के कारण भारी डीलडोल वाला होता है । अत: यह छोटी सी 'केशकीनुमा' पगड़ी उनके सौंदर्य को बिगाड़ती है । पूछने पर उनका कहना होता है यह भी पगडी ही है । वे अपने रचे हुए ढोंग को उचित ठहराने का असफल प्रयास करते दिखाई देते हैं जबकि वे इस सत्य को जानते हैं कि जो उन्होंने 'केशकी' अथवा छोटी दसतार बांधी हुई है इसे पगडी कदाचित नहीं का जा सकता, यह तो केवल घर पर रहते समय बांधने का हुक्म है क्योंकि सिक्ख ने कभी भी नंगे सिर नहीं रहना । जब कोई सिक्ख किसी भी कार्य के लिए घर से बाहर जाता है तो उसे केशकी के ऊपर सम्पूर्ण लम्बाई की पगडी बाँधनी अनिवार्य है अर्थात छोटी दसतार के ऊपर एक और पगड़ी भावार्थ दोहरी दसतार बांधनी चाहिए जैसा कि आप मुझे देख सकते हैं । मैंने दोहरी पगड़ी बांधी हुई है ।

जो युवक केवल छोटी 'केशकी' अथवा छोटी गोल पगड़ी बांधकर घर से बाहर अपने कार्यो पर जाते हैं वह अपनी शानो-शौकत खो देते हैं क्योंकि सार्वजनिक स्थल पर बिना पगड़ी के युवक भोंदा (भद्दा) दृष्टिगोचर होता है बिल्कुल वैसे ही जैसे कोई सैनिक अधूरी

पौशाक में ड्यूटी पर तैनात हो । न जाने क्यों सिक्ख युवकों का इन छोटी छोटी बातों पर ध्यान नहीं जाता कि उन्हें अन्य मतावलम्बी देख रहे हैं । अत: हमें उनके समक्ष सुन्दर और आकर्षक दिखाई देना चाहिए, जिससे वे प्रभावित होकर कह उठे कि सुन्दरता के प्रतीक सिक्ख लोग हैं परन्तु यहाँ बात इसके विपरीत है । सिक्ख युवकों को अपने न्यारेपन पर न आत्मगौरव है न ही स्वाभिमान जबकि उनका न्यारापन उन्हें मानव समाज में सर्वश्रेष्ठ स्थान दिलवाता है, इसलिए उन्हें अन्य समस्त धर्मावलम्बी सरदार जी कर पुकारते हैं जिसका सीधा सा अर्थ है तुम मानव समाज के मुखिया हो । यह बात तो यथार्थ में तभी सत्य सिद्ध होगी जब सिक्ख युवा पीढ़ी अपने सौंदर्य के प्रति सजग होंगे । घर से बाहर निकलते समय दर्पण (आईना) अवश्य ही देखें, जैसे युवतियां अपने सौंदर्य के प्रति जागरूक रहती हैं वे अपने चेहरे और केशों को श्रृंगार करने के लिए कई प्रकार के प्रसाधन का प्रयोग करती है तथा उनका एक विशेष बजट इस कार्य के लिए निर्धारित रहता है । ठीक इसी प्रकार सिक्ख युवकों को भी चाहिए कि वे अपने को आकर्षक बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें ।

सिक्ख युवकों का सौंदर्य उनकी पगड़ी और दाढ़ी का श्रृंगार करने में छिपा हुआ है । विशेषकर मूंछें उनके पुरूषत्व की प्रतीक होती है । मूछें यदि श्रृंगारी जाये तो वह वीरता का चिन्ह बन जाती है । जो युवक मूछें फिक्सों इत्यादि से ताव देकर श्रृंगारते हैं उनकी मूछें उनके चेहरे को तेजोमय बना देती है जिससे मालूम होता है कि उनकी मूछें प्रतिद्वन्द्वी को शटअप-शटअप कह रही हैं । इसके विपरीत जो सिक्ख युवक मूछों को ताव न देकर उनका अपमान कर देते हैं, उनका चेहरा ऐसा दिखाई देता है जैसे वे अपने प्रतिद्वन्द्वी को कह रहे हो -(Please-Please) कृपया मुझे क्षमां करें इत्यादि । कुछ एक युवकों की मूछें उनके मुंह (होंठो) के ऊपर आकर उनके चेहरे को बदसूरत बना रही होती है जबकि वे प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्हें श्रृंगार के लोहपुरूष के रूपमें दिखाई दे सकते हैं । कुछ सिक्ख युवक इस विषय में सजग भी हैं जिन्होंने अपनी मूछें को गोल कुण्डली वाली अथवा फिक्सों से ताव देकर एक विशेष कोण लगभग 60 डिग्री पर खडी कर रखी होती हैं जिससे वे संत-सिपाही दृष्टिगोचर होते हैं ।

एक युवक-ज्ञानी जी, आप युवकों को Handsome बनने के लिए दाड़ी बांधने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं जबकि कुछ सिक्ख संस्थाएं दाढ़ी बांधने का विरोध करती हैं उनका मानना है कि दाढ़ी प्रकाश कर के ही रखनी चाहिए यही वास्तविक गुरू मर्यादा है?

प्रचारक- बेटा जी, जैसे कि में पहले बता चुका हूँ मैं एक भूतपूर्व सैनिक हूँ। सेना में मेरा ट्रेड था E&M अर्थात-ऐलैक्ट्रिक्ल एन्ड मकैनिकल सुपर वाइजर था। सिवल में इस ट्रेड को फोरमैन कहते हैं । हम लोग EME वर्कशापों में प्रत्येक प्रकार के काम करते थे यानि कि हरफन मौला- All Rounder इस लिए हमे कभी लेथ मशीन चलानी पड़ती, कभी वैल्डिंग करनी पड़ती कभी बड़ी-बड़ी मशीनों/गड़ियों के नीचे लेट कर उन को रिपेयर करना होता ऐसे में दाढ़ी कैसे प्रकाशमान रखी जा सकती है? स्वाभाविक ही हमें एक अच्छे सैनिक होने के कारण दाढ़ी संतोखनी पड़ती थी। उन दिनों मेरे साथ कुछ अखण्ड कीर्तनीय जत्थे के सदस्य भी थे वे भी ड्यूटी समय दाढ़ी सैनिक अदेशों अनुसार संतोख लेते थे।

दूसरी बात-अकाल तख्त की रहित मर्यादा में दाढ़ी संतोखने पर किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं की गई।

सिक्खी एक विशाल विचार धारा है। जिसमें चरित्र निर्माण करवाया जाता है। सिक्खी कोई कच्चा धागा नहीं जो समय अनुसार रोज़ी रोटी (कित-कार) के लिए दाढ़ी संतोखने पर प्रतिबन्ध लगाए। सिक्खी तो दक्यिानूसी बातों से बहुत उपर है इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि विपत्ती काल में श्री गुरू गोविन्द सिंघ जी ने अपनी वेश-भूषा बदल कर उच्च के पीर रूप धारण कर शत्रु को झांसा दिया था।

दाढ़ी को काट कर (Modification) करना सिक्खी की मूल विचार धारा के विपरीत है परन्तु दाढ़ी संतोखना, अमृतधारण करने पर चार कुरहित जो दृढ़ करवाई जाती हैं उन नियमों का कहीं खण्डन नहीं होता।

सिक्ख परम्परा में बलपूर्वक कोई भी धार्मिक कार्य करने को बाध्य करने का विधान है ही नहीं अत: यहाँ तो अनुयायियों के हृदय में श्रद्धा, प्रेम, भक्ति इत्यादि शुभ गुणों को धारण करने की प्रेरणा ही की जा सकती है। जब केशों (रोमों) के प्रति आस्था उत्पन्न हो तभी तो कोई दाढ़ी प्रकाशमान करने में अपने को गोरवमय अनुभव करेगा।

वर्तमान काल में सिक्ख समाज का ताना-बाना इस प्रकार है कि जो महिलाएं सिक्ख सिद्धांतों पर अथाह श्रद्धा-भाव रखती हैं वे भी अपने निकट वर्ती पुरूषों को दाढ़ी संतोखी हुई स्वरूप में देखना पसंद करती हैं। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव तथा सर्वेक्षण है।

मैं आपके समक्ष प्रकृति के कुछ सर्वमान्य सत्य सिद्धांतों पर प्रकाश डालना आवश्यक समझता हूँ । प्रकृति ने प्रभु की आज्ञा अनुसार मनुष्य को दाढ़ी-मूछें तथा लम्बे केश प्रदान किये हैं । वास्तव में प्रभु ने मानव को अपना स्वरूप प्रदान किया है । हमें चाहिए कि हम प्रकृति का अनुसरण करें अर्थात केश, दाढ़ी, मूछें अथवा शरीर के अन्य रोम (बाल) जैसे मिले हैं, वैसे ही रखें । यही प्रभु की इच्छा है । उसकी सहमति में ही हमारी भलाई है, इस प्रकार हम उस परमपिता परमेश्वर के आज्ञकारी पुत्र बन सकते हैं ।

एक युवक ज्ञानी जी ! आपका कहना है कि प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को अपना स्वरूप दिया है परन्तु सिद्धान्त रूप में तो प्रभु को निराकार माना गया है ?

प्रचारक -क्रान्तिकारी जगत गुरू नानक देव जी ने मानव समाज का मार्ग दर्शन करते हुए कहा - 'प्रभु' परम पिता परमेश्वर, निराकार है । उसका कोई विशेष स्वरूप नहीं है, क्यों कि वह निरगुण रूप है । अत: वह एक शक्ति है व्यक्ति नहीं परन्तु जब उसने अपनी सृष्टि का सर्वोतम जीव (मनुष्य) बनाया तो उसे एक विशेष स्वरूप दिया जिसमें वह स्वयं भी अवतरित हो सके । भले ही समस्त जीवों में उसका अंश विद्यमान है तो भी वह समय समय मानव कल्याण के लिए पराक्रमीं पुरूषों अथवा भक्तों के रूप में प्रकाशमान होता ही रहा है। शायद इसलिए उसे महापुरूषों ने जब अनुभव किया तो उसे केशरों या केशव कहा - जिसका अर्थ है - हे सुन्दर तथा लम्बे केशों वाली महाशक्ति ----

नाम तेरा केसरो ले छिटकारे

यथा

सुप्रसन्न भए केसवा में जन हरि गुण गाहि

यथा

पारि उतारे केसव

जैसे कि आप जानते हैं कि गुरू हुक्म है केशों (रोमों) को ज्यों का त्यों बनाये रखना है । इनमें कोई फेरबदल नहीं करना, केवल उन्हें स्वच्छ रखना तथा सजाने का हमें अधिकार है । यह आपको प्रकृति द्वारा दिया गया वास्तविक स्वरूप शेर (सिंह) की भान्ति है । इसमें केश सुन्दरता का प्रतीक है तथा केश सिक्खी की मोहर है । मूछें वीरता का प्रतीक है, दाढ़ी दैवी गुणों की प्रतीक है जैसे दया, क्षमा, विनम्रता, सत्य और मधुरवाणी इत्यादि । पुरूष को प्रकृति ने दाढ़ी, मूछों से श्रृंगारा है जबकि नारी को कृत्रिम प्रसाधनों की आवश्यकता पड़ती है । प्रकृति का यह सिद्धान्त है कि उसने नारी को दाढ़ी-मूछें नहीं दी, ठीक इसी प्रकार जब तक नर बालक यौवन को प्राप्त नहीं कर लेता उसको प्रकृति द्वारा दाढ़ी-मूंछ नहीं दी जाती । यही अटल विधान है । इस प्रक्रिया में हमारी सहमति हमें हर्षित करती है ।

साहेब श्री गोबिन्द सिंह जी के समय में भी कुछ युवक सम्पूर्ण पगड़ी बांधने में आलस्य कर जाया करते थे। वे पगड़ी के स्थान पर अपनी माता की चुनरी अथवा पत्नी का दुपट्टा सिर पर बांध कर पगड़ी के रूप में उसका असफल प्रदर्शन करने का प्रयास करते थे। जब गुरूदेव जी का ध्यान इस त्रुटि पर गया तो उन्होंने तुरन्त उन युवकों से कहा - भ्रम मत पालो, जिसे तुम पगड़ी कहते हो वह पगड़ी नहीं 'परना' अथवा केशकी है । अत: अब तुम्हें इस केशकी के ऊपर सम्पूर्ण पगड़ी बांधना अनिवार्य है । अर्थात अब से प्रत्येक सिक्ख दोहरी दसतार बांधेगा । जो ऐसा करेगा, हमारी उस पर अति प्रसन्नता होगी । वह हर मैदान फतेह प्राप्त करेगा तथा चढ़डी कला में रहेगा । उन्होंने फिर कहा - **जितना बड़ा सरदार, तनी बड़ी दसतार ।**

एक गोल पगड़ी बांधने वाला युवक उठा और उसने प्रश्न किया - क्या मेरी पगड़ी उचित नहीं ?

प्रवक्ता - आपने सुविधानुसार प्रयास किया हुआ है, बाकी वस्त्र सभी आधुनिक शैली के पहने हैं, जैसे पैंट, कमीज, बूट इत्यादि परन्तु केवल पगड़ी गोल और छोटी सी बांधी है जो कि इस पोशाक के साथ अच्छी नहीं लगती । यदि गोल पगड़ी ही बांधनी है तो कोई बात नहीं, बाकी समस्त वस्त्र भी उसी अन्दाज में तथा उसी शैली के पहनें जैसे कुर्त्ता, पाजामा, पंजाबी जूती इत्यादि तो इस प्रकार आपका पहरावा समाज में स्वीकार्य हो जायेगा । ब-शरते कि आप छोटी गोल पगड़ी के स्थान पर दोमाला बांधा (सजाया) करें जोकि निहंग बांधते हैं।

गोल पगड़ी वाला युवक - परन्तु सभी संत अथवा महापुरूष ऐसी ही पगड़ी पहनते हैं ।

प्रवक्ता - यदि गोल पगड़ी बांधने से कोई व्यक्ति संत बन जाये तो संतगिरी बहुत सस्ती वस्तु बन गई । अत: आप गोल पगड़ी के झांसे में मत आवें, इन बातों से कुछ मिलने वाला नहीं । हाँ, इतना जरूर है कि आप संतों की नकल के चक्कर में गोल पगड़ी से अपना व्यक्तित्व खो रहे हैं । इस समय आप घर के हैं न घाट के । कउवा चला हंस की चाल अपनी चाल भी भूला।

एक अन्य युवक - महोदय, मेरे केशों में फोड़े-फुंसियां निकल आती हैं, उसका क्या उपाय है ?

प्रवक्ता - बेटा जी, इस वैज्ञानिक युग में इस रोग की अचूक दवा है । नोट कीजिए एलोपैथिक में - Mercuric oxide yellow 10 gram (ग्राम) 40 gram Soft Paraffin yellow में मिला लें, इस मलहम को सिर के फोड़ों में सोते समय मले सुबह curbolic soap से धो दीजिए । ऐसा कुछ दिन करने के पश्चात् सिर के फोड़े-फुंसियां ठीक हो जाती हैं । इसके साथ रोगी को कुछ दिन Septron tablet एक सुबह और एक रात में पानी के साथ लेते रहना चाहिए ।

आयुर्वेदिक औषधियों में आप रोगी के सिर पर नीम के तेल की मालिश करें और curbbolic soap से धोना चाहिए । खाने के लिए गंधक बट्टी tablet सुबह शाम प्रयोग में ला सके हैं । ये दोनों नुस्खे अचूक हैं ।

एक अन्य युवक - महोदय, मैं पगड़ी बांधता हूँ तो मेरे सिर में पीड़ा हो जाती है अथवा कानों में दर्द प्रारम्भ हो जाता है । इसके अतिरिक्त माथे पर भी पगड़ी से जख्म हो जाते हैं ।

प्रवक्ता - आप पगड़ी को बहुत अधिक गीला करके बांधते हैं जो कि सूखने पर सख्त हो जाती है । इस प्रकार वह आपके माथे पर जख्म का कारण बन जाती है अथवा सिर की पीड़ा और कानों में दर्द महसूस होने लगता है । इसका उपाय है - आप पगड़ी को गीला न करें और पगड़ी थोड़ी ढ़ीली बाधें । यदि फिर भी वह सिर में पीड़ा अथवा कान दर्द करती है तो पगड़ी को सिर पर ही एक दो बार घुमायें । इस प्रकार पगड़ी की जकड़ समाप्त हो जायेगी और वह किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं देगी ।

एक अन्य युवक - छोटी गोल पगड़ी सहज में बांधी जा सकती है जबकि बड़ी पगड़ी बांधने में समय बहुत लगता है । इस कारण मुझे अक्सर देरी हो जाती है । अत: मैं जल्दी के कारण छोटी गोल पगड़ी ही बांधकर गुजारा कर लेता हूँ ।

प्रवक्ता - बहाने बाजी से कभी भी जीवन की गाड़ी नहीं चलती । बहाने बनाकर व्यक्ति अपने आप को ही धोखा देता है । अपने को धोखा देना असफलता का कारण बन जाता है । जिसका व्यक्ति को जीवन भर पश्चाताप झेलना पड़ता है क्योंकि दूसरे बाजी मार ले जाते हैं । इस गोल पगड़ी (केशकी / छोटी दसतार / पटका) में तुम हीरो के बदले जीरो दिखाई दे रहे हो, तुम्हें कोई भी सरदार जी कह कर सम्मान नहीं दे सकता न तुम बच्चों में गिने जाते हो न पुरूषों में, तुम मझधार में हो, न आर न पार। गुरूदेव का हुक्म है - मेरा सिक्ख लाखों में अपनी 'साबुत सूरत दसतार सिरा' से पहचाना जायेगा । खालसा अपने न्यारेपन को दर्शाने के लिए सदैव जागरूक रहेगा। जिससे उनकी श्रेष्टा को देखकर समस्त जगत कहने के लिए विवश हो जाये, सिंह इज किंग । जब आप पगड़ी रूपी ताज पहनेंगे ही नहीं तो आपको नरेश / राजा कौन कहेगा ? जैसा कि आप जानते ही हैं कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी का जीवनचर्या बहुत व्यस्त रहती है । उन्हें प्रात:काल गार्ड लेने आ जाते हैं । अगर वह तुम्हारी तरह आलस्य करे अथवा बहाने करें तो वह तो कभी भी पगड़ी धारण ही न कर पाये

। मेरा तात्पर्य यह है कि क्या तुम उनसे भी बड़े आदमी बन गये हो जो तुम्हें पगड़ी बांधने का समय नहीं मिल पाता । ठीक इसी प्रकार जनरल जे. जे. सिंह प्रात:काल गार्ड आफ ऑनर के लिए सैनिकों की परेड का मुआयना करते हैं, कभी उनको बिना पगड़ी के देखा है आपने ?

ठीक इसी प्रकार एक सिक्ख युवक आलसी था देरी से बिस्तर से उठने के कारण प्रतिदिन दफ्तर लेट हो जाता था । अत: उसने दाढ़ी बाँधना, पगड़ी बाँधने को लेट होने का कारण समझ कर सिक्खी को त्याग दिया और वह गुरू से बेमुख होकर पतित हो गया परन्तु वह फिर भी दफ्तर समय से नहीं पहुँच पाता था । अब उसे सुबह-सवेरे शेवर में ब्लेड डालकर शेविंग क्रीम के ब्रुश से झाग बनाकर गालों को छीलना पड़ता था जिससे कई बार गालों पर घाव हो जाते और सारा दिन गालों पर जलन होती ही रहती । इसके अतिरिक्त कई बार नाई की दुकान पर घंटो अपनी बारी आने का इन्तजार करता, इसके लिए उसे बड़ी राशि भी देनी पड़ती । अत: वह दुखी रहने लगा । उस के बॉस ने कहा बाकी स्टाफ किस प्रकार समय पर पहुंचता है? उत्तर में उस ने कहा -बाकी स्टाफ में महिलाएं अधिक हैं वे समय पर पहुंच सकती हैं, क्योंकि उन्होने ना पगड़ी बांधनी हैं न शेव करनी है। यह उत्तर सुन कर सभी महिला कर्मचारियों ने बहुत भारी आपत्ति की। उन का कहना था हमें श्रृंगार करने में पुरूषों की अपेक्षा कहीं अधिक समय लगता है परन्तु हम बहुत अधिक जिम्मेवारी पूर्ण जीवन जीती हैं। इसलिए हम अधिकांश घरेलू कार्य रात सोने से पहले ही निपटा लेती हैं, सुबह दुबारा भी एक डेढ़ घंटा पहले उठकर बच्चों को तैयार करके स्कूल भेजती हैं तथा सास-ससुर को नाश्ता देकर समय से काम पर पहुंच जाती हैं। यह सत्य सुनने के पश्चात उस पतित के पास कोई उत्तर नहीं था। वास्तव में प्रतिदिन दफ्तर देर से पहुँचने का कारण उसका आलस्यमय जीवन था नाकि पगड़ी तथा दाढ़ी बांधना था।

गुरूदेव का हुक्म है -

गुर सतिगुरू का जो सिक्खु अखावै।
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै।

जो सिक्ख आलस्यमय जीवन जीना चाहते हैं, वह सिक्ख गुरू कृपा के पात्र नहीं बन सकते ।

एक अन्य युवक - मुझे गर्मी बहुत लगती है, मैं इसलिए पगड़ी के स्थान पर पटका बांध कर गुजारा कर लेता हूँ ।

प्रवक्ता - पहली बात तो पगड़ी प्रत्येक मौसम में उपयुक्त है । जहाँ यह हमें सर्दी से बचाती है, वहीं गर्मी में तेज धूप से सुरक्षा प्रदान करती है । जब हमें पसीना आता है तो यह तुरन्त उसे हवा के झोंको से ठण्डा करके शीतलता प्रदान करती है । उस समय पगड़ी सिर पर एयरकंडीशनर का कार्य करती है । वैसे जिस व्यक्ति के गुरूजन तती तवी पर विराजमान होने पर भी गर्मी की पीड़ा अनुभव नहीं करते थे, उनका सिक्ख यह कैसी दकियानूसी की बातें कर रहा है ? इसके अतिरिक्त जब आप पगड़ी बांधते हैं तो वह आपके सिर को एक हैलमेट के रूप में सुरक्षा भी प्रदान करती है । यह पगड़ी का हमें वरदान है ।

एक अन्य युवक - आप मेरे लिए अरदास (प्रार्थना) करें कि मुझे पगड़ी बांधना आ जाए ।

प्रवक्ता - भगवान उसी की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता स्वयं करता है अर्थात इस कार्य के लिए आपको स्वयं अरदास करनी चाहिए और सच्ची लगन से आज ही पगड़ी बांधने का अभ्यास प्रारम्भ कर देना चाहिए, नहीं तो बात बिल्कुल वैसी ही हो जायेगी जैसे एक किसान खेती बीजे ही नहीं और प्रार्थना करे, हे प्रभु ! मेरी खेती फले-फूले ।

एक अन्य युवक - मैं यदि सिर पर टोपी पहन लेता हूँ तो इसमें क्या अन्तर पड़ जाता है । मैंने तो केशों को पूर्ण रूप से ढ़कने का कार्य कर लिया है ।

प्रवक्ता - प्रभु कृपा से आपको बन्दर से मानव शरीर मिल गया है और गुरूदेव ने आपके सिर पर ताज रूपी पगड़ी पहनाकर आपको नरेश बना दिया परन्तु आपको यह उन्नति अच्छी नहीं लगी । आपमें फिर से बन्दर वाले संस्कार जागृत हो उठै हैं और आपने दोबारा बन्दर बनने के लिए बन्दर टोपी डाल ली है अर्थात आप को रिवर्स गेर लग गया है जबकि आप यह भी जानते हैं कि सिक्ख आचार संहित (रहित मर्यादा) में टोपी धारण करना सख्त अपराध माना गया है ।

युवक - वास्तव में मुझे पगड़ी बांधने में बहुत कठिनाई होती है और मुझ से पगड़ी सुन्दर भी नहीं बांधी जाती ।

प्रवक्ता - आप मुझे अपने बारे में कुछ जानकारियां दें । मेरा मतलब है अपना बॉया-डेटा (Bio-Data) बताएं ।

युवक - मैं 22 वर्ष का जवान हूँ, इस समय स्नातक की शिक्षा प्राप्त कर रहा हूँ, इत्यादि

प्रवक्ता - आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, किसी बड़े पद की प्राप्ति के लिए चयनित होने का स्वप्न देख रहे हैं और जल्दी ही आपकी आयु विवाह योग्य हो जायेगी । ऐसे में आप केवल पगड़ी बांधना नहीं जानते अत: आपकी प्रतिभा पर शंका होनी स्वाभाविक है । क्या आप मोटर साईकिल चलाना जानते हैं ? यदि हाँ तो वह कैसे सीखी थी ?

युवक - वह तो देखा देखी थोड़ा सा अभ्यास करने पर चलाना आ गया था ।

प्रवक्ता - मैं भी वही बात कहने जा रहा हूँ । यहाँ आपकी इच्छा शक्ति तीव्र थी । वह कार्य केवल देखा-देखी में अथवा खेल खेल में आपने सीख लिया परन्तु आपको पगड़ी बांधने में रूचि नहीं हुई, इसलिए आप स्वयं को धोखा देते रहे और अपनी प्रतिभा का उपयोग ही नहीं किया । यदि आपने पगड़ी के प्रति थोड़ा सा भी उत्साह दिखाया होता तो जहाँ चाह वहाँ राह की कहावत अनुसार आप एक सुन्दर पगड़ी वाले बांके छैल छब्बीले युवक दृष्टिगोचर होते परन्तु मुझे इस समय भारी मन से कहना पड़ रहा है, जहाँ आपने अपना व्यक्तित्व खोया है वहीं सिक्खी को भी दाग लगाया है ।

एक अन्य युवक - कुछ युवक पगड़ी बांधते समय केशें का जूड़ा खोल देते हैं और उनको घुमा कर पीछे बांधते हैं क्या यह गुरमति में स्वीकार्य है ?

प्रवक्ता - पगड़ी बांधने का तात्पर्य ही केशों को सम्मान प्रदान करना है । यदि कोई केशों को खोल कर अथवा जूड़ा न करके कोई

अन्य विधि अपना कर पगड़ी बांधता है तो वह सिक्ख किस बात का है । यदि उसने मुख्य लक्ष्य के विपरीत आचरण किया हुआ है ? याद रहे, पगड़ी के साथ, जूड़ा, कंघा दिखाई देना चाहिए।

एक अन्य युवक - मैंने आज ही पगड़ी नहीं बांधी, वैसे मैं अक्सर पगड़ी बांधता ही हूँ ।

प्रवक्ता - जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ कि गुरू हुक्म है सिक्ख ने सदैव पगड़ी बांध कर ही घर से बाहर विचरण करना है । जब आप अपने गुरूदेव से मिलने गुरूद्वारे पर आये हैं तो उनके सम्मुख होते समय क्या कहेंगे कि मैं तेरा बेटा अपना पगड़ीनुमा ताज घर पर छोड़ आया हूँ और मैं अपना न्यारापन भी सम्भाल नहीं पा रहा हूँ, न ही साबुत सूरत हूँ आदि आदि । क्या तुझे गुरूदेव स्वीकार करेंगे ? तुम्हें आशा है तुम उनकी प्रसन्नता के पात्र बन सकते हो ? ध्यान रहे, गुरू हुक्म है -

सलामु जबाबु दोवै करे, मुंढहु घुथा जाइ।

नानक दोवै कुड़ीआ, थाइ न काई पाइ ।

भावार्थ - एक तरफ तो आप गुरूदेव जी की कृपा के पात्र बनने के लिए उनके समक्ष मस्तिष्क झुकाते हैं और दूसरी ओर उनके आदेश के विरूद्ध पगड़ी न धारण करने का अपराध करते हो फिर तुम्हें गुरू आशीष कहाँ से प्राप्त होगी ?

मैं किसी दूसरे का कोई उदाहरण आपके समक्ष रखूं इससे पहले अपने जीवन की दिनचर्या आपको बताता हूँ । मैं एक भूतपूर्व सैनिक हूँ । हमें सीमावर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में स्नो टैंटों में रहना पड़ता था । बर्फबारी के दिनों में भी हमें प्रात: नित्य प्रति फालिन होना होता है सैकिंड परेड में हमें नाश्ता करने के पश्चात् सम्पूर्ण वर्दी में फालइन होना अनिवार्य होता था । प्रथम परेड और दूसरी परेड में केवल आधा घंटे का ही अन्तराल होता था । इस बीच हम सभी नाश्ता भी करते और पगड़ी भी बाँध कर, सब से पहले सीटी की आवाज पर फालइन हो जाते, जैसा कि आप सभी जानते हैं, वहाँ पर बहानेबाजी कभी भी नहीं चल सकती ।

मुझे यह सभी सँस्कार अपने माता पिता जी से प्राप्त हुए हैं । जब मैं किशोर अवस्था का था तो मुझे मेरी माता तब तक नाश्ता नहीं देती थी जब तक मैं नित्य नेम (पाठ) न कर लूं । मेरे पिता जी मुझे सूर्य उदय होने से पूर्व ही उठा देते थे । यदि मैं कभी सर्दी के कारण आलस्य करता तो वह मेरी रजाई उठा कर तुरन्त सम्भाल देते थे । उनका उस समय का किया गया बल प्रयोग आज हमें शुभ सँस्कार प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुए हैं ।

जो बड़े-बुजुर्ग ममता के कारण ऐसा सोचते रहते हैं कि बच्चे अभी छोटे हैं, समय आने पर अपने आप सीख जाएंगे, उनका सोचना सदैव गलत ही सिद्ध होता है क्योंकि बड़े होने पर बच्चे वह सँस्कार लेने से इन्कारी हो जाते हैं और कई प्रकार के बहाने बाजी करते हैं ।

एक बात सभी युवक गाँठ बाँध लें पुरूषार्थी जीवन ही प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है । निरोग रहने का भी यही सिद्धान्त है। प्रात:काल बिस्तर त्यागने से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तीनों शक्तियाँ प्राप्त होती हैं । अधिक खाने से कोई पहलवान नहीं बनता बल्कि शरीर रोगी बन जाता है । पहलवान केवल कसरत करने से बनता है, इसलिए लोक कहावत है - हड का हराम तथा जबान का चटूरा सदैव रोगी बना रहता है ।

श्री गुरू अंगददेव जी ने इस तथ्य को मद्देनजर रखते हुए अपने जीवनकाल में बहुत से अखाड़े बनवाये जहाँ युवकों को सदैव स्वस्थ रहने के लिए प्रात:काल कसरत करवाई जाती थी जिससे सभी वर्गो में अमृतवेला में उठने के सँस्कर प्राप्त हो सके ।

एक दिन मैं सी: एस: डी: कैन्टीन में कुछ घरेलू सामान लेने पहुँचा, उस समय एक कार में से मेरे समक्ष एक सिक्ख वृद्धा और उसका युवक पुत्र उतरा । उस वृद्धा ने मुझे सत श्री अकाल बुलाई । मैंने भी उत्तर दिया परन्तु मैं उनको जानता नहीं था । वास्तव में वह भी मेरी तरह दाढ़ी प्रकाश मान रखने के कारण मेरी तरफ मित्रता का हाथ बढ़ा रहे थे, इसलिए मैंने उनके पुत्र को भी बहुत स्नेह से बुलाया जो कि मेजर रैंक का अधिकारी था परन्तु वह अपने पिता के विपरीत गुरूमत विरोधी कर्म किये हुए था, इसलिए वह पिता की अपेक्षा तुच्छ दिखाई दे रहा था । मैंने उससे हाथ मिलाते हुए कहा - बेटा जी, आपने पगड़ी क्यों नहीं धारण की ? उसने तुरन्त उत्तर दिया - सिक्खी तो हृदय में होनी चाहिए इन बातों से क्या होता है । इस पर मैंने कहा - यदि आपके हृदय में सिक्खी होती तो अवश्य ही आपके चेहरे से झलकती जैसे आपके पिता के चेहरे पर नूर झलक रहा है । वह पूर्ण रूप से गुरू के लाल दृष्टिगोचर हो रहे हैं । दूसरी बात यह है कि आप एक अच्छे सैनानी (फौजी) हैं यदि आप यह मान लें कि मैं एक कुशल सेनानायक हूँ इसलिए मेरे मन में सेना के प्रति बहुत निष्ठा है, अब वर्दी पहनने का क्या काम रह गया है ? क्या ऐसे में आप सेना में स्वीकार कर लिए जायेंगे, कदाचित नहीं । वहाँ तो अधूरी वर्दी पर चार्जशीट तुरन्त बन जाती है । तीसरी बात - खालसा पंथ के संस्थापक श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी पूर्ण गुरू थे । उन्होंने तो कभी भी नहीं कहा कि मेरे हृदय में सिक्खी बसी हुई है । अत: मुझे जनसाधारण की तरह अमृत धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सर्वविदित है कि उन्होंने स्वयँ भी पंज प्यारों से गुरू दीक्षा के रूप में अमृत धारण किया था । मेरी बात के समर्थन में उसके पिता जी ने कहा - बेटा जी जहाँ हमारे हृदय में श्रद्धा है वहीं पंज ककारी वर्दी भी अनिवार्य है जैसे अच्छे सैनिक के लिए सम्पूर्ण वर्दी क्योंकि हम अकाल पुरख की फौज हैं ।

एक युवक-ज्ञानी जी, मैं पगड़ी बांधने का बहुत प्रयास करता हूँ परन्तु मुझे सफलता नहीं मिलती है?

प्रचारक- अकल बड़ी होती है या भैंस? तुम ने जूड़ा ठीक माथे के ऊपर किया हआ है, जब जूड़ा सिर के केन्द्र (मध्य/चोटी) में करोगे तभी पगड़ी बाँधी जा सकेगी और गुरू आदेशों अनुसार जूड़े के पीछे लकड़ी का कंघा भी रख पाओगे। वास्तव में जहाँ पगड़ी बाँधी जानी थी वहाँ आप ने जूड़ा बाँधा है इस लिए आप पगड़ी बांधने में असफल रहते हैं। अब मैं आप को पगड़ी बाँधने का गुर (सिद्धांत) बताता हूँ।

आप एक छोडा सा घड़ा लेलें जो मनुष्य के सिर के आकार का हो उसे ओंधा कर के उस पर पगड़ी बांधना प्रारम्भ करें। आप ऊपर से नीचे पहला चक्र लगाए गें दूसरी बार इस चक्र को आप माथे के मध्य से गुण के निशान अनुसार काटते हुए बढ़ते ही चले जाएगें इस प्रकार अंतिम बार नीचे से ऊपर की ओर बढ़ेगें । फिर पगड़ी सम्पूर्ण हो जाएगी। इस विधि को धैर्य अनुसार अपने सिर पर अपनाए ध्यान रखे पगड़ी को भूलकर भी गीला न करें। सफलता आप के चरण चूमेगी।

युवक- पगड़ी को गीला क्यों न करें, गीला करने से क्या हानि है?

प्रचारक:- 1. गीली पगड़ी होने से नज़ला, ज़ूकाम, सिर दर्द, छीके इत्यादि रोग उत्पन होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

2. गीली पगड़ी सूकने पर सिर को जकड़ लेती है जिस से सिर में पीड़ा अथवा माथे में जखम हो जाते हैं ।

3. सिर में ठंडक चढ़ने से आई-साईड वीक होने लगती है ।

प्रवक्ता - एक अन्य प्रौढ़ सिक्ख व्यक्ति से - आपकी आयु भी अधिक है और आप श्रद्धावान भी दिखाई देते हैं । आपने पगड़ी क्यों नहीं बांधी ?

प्रौढ़ व्यक्ति - बस वैसे ही नहीं बांधता, जब मेरा इसी टोपीनुमा पगड़ी से काम चल जाता है तो मैं पगड़ी बांधने का कष्ट क्यों करूं ? और इसमें हरज़ भी क्या है ? जब तक मैं पगड़ी बांधूगा, इतने समय में, मैं लाख रूपये की सेल कर लेता हूँ ।

प्रवक्ता - शर्म की भी हद होती है ! ! तुम गुरू के सिक्ख हो ही नहीं सकते ? जो व्यक्ति गुरूदेव जी के मुख्य आदेशों को भी ताक पर रखकर धन की तरफ भागता फिरता है । गुरू को तुम्हारा धन नहीं चाहिए उन्हें तो तुम्हारा मन चाहिए । गुरूदेव को तो वह सिक्ख चाहिए जो लाखों में अपने न्यारे स्वरूप में पहचाना जाये और वह अपने सीने पर हाथ रख कर कह सके कि मैं गुरू का लाल हूँ । मैं उनके एक इशारे पर अपना तन मन धन न्यौछावर कर सकता हूँ । ऐसा सिक्ख जो पगड़ी बांधने में भी पाखण्ड करता है उसे गुरूदेव कदाचित स्वीकार नहीं कर सकते ।

एक स्थानीय कमेटी का सदस्य - कृपया आप किसी पर भी दबाव न डाले और सख्त शब्दों का प्रयोग भी न करें ।

प्रवक्ता - आपके कथन अनुसार तो देश में पुलिस फोर्स होनी ही नहीं चाहिए और अध्यापकों को विद्यार्थियों को डांटना अथवा ताड़ना भी नहीं करनी चाहिए । यदि ऐसा हो सकता तो पृथ्वी स्वर्ग बन जाती परन्तु सभी आपके विचारों अनुसार आज्ञा पालक नहीं होते । कुछ एक को सख्ती से पेश आना ही पड़ता है । कुछ ऐसे कार्य भी होते हैं जिन्हें पहले पहल बलपूर्वक लागू करवाना पडता है । बाद में वे संस्कारों में सम्मिलित हो जाते हैं, इसलिए लोक कहावत है - हकूमत गर्मी की, दुकानदारी नरमी की, नौकरी बेशर्मी की । जो ऐसा करते हैं, वही सफल होते हैं ।

प्रवक्ता - एक अन्य प्रौढ़ व्यक्ति से - आपकी आयु भी अधिक हैं और आप श्रद्धावान भी दिखाई देते हैं, आपने पगड़ी क्यों नहीं बांधी ?

प्रौढ़ सिक्ख व्यक्ति - मेरे सिर में दर्द रहता है । अत: मैं पगड़ी नहीं बांध पाता ।

प्रवक्ता - क्या आपने सिर दर्द का उपचार करवाया है ?

प्रौढ़ व्यक्ति - मैंने कोई वैद्य, कोई डॉक्टर नहीं छोड़ा, बहुत लोगों से इलाज करवाया है परन्तु दर्द ज्यों का त्यों हल्का हल्का सदैव बना रहता है ।

प्रवक्ता - आपकी बात में कितना सत्य है वह तो भगवान ही जानता है । यदि सिरदर्द वास्तव में है और हटता नहीं तो मैं आपको एक अचूक नुस्खा बताता हूँ जिसके प्रयोग से आप का सिर दर्द धीरे धीरे सदा के लिए हट जाएगा। आप प्रात: काल (अमृत बेला) में 100 ग्राम जलेबी एक गिलास में डालकर उसके ऊपर उबलता हुआ दूध डालकर ढक दें, दस मिनट के पश्चात् उसका सेवन करे । यह क्रिया प्रतिदिन करने से आपका सिर दर्द सदैव के लिए हट जायेगा ।

प्रवक्ता -एक अन्य प्रौढ़ सिक्ख से - सिंह जी ! आप जी ने पगड़ी क्यों नहीं बांधी ? केवल छोटी सी केशकी बांध कर आप परिवार सहित यहां पधारे हो ?

प्रौढ़ सिंह - झेंपते हुए ! मैंने आज तक कभी पगड़ी बांधी ही नहीं क्योंकि पगड़ी बांधना मुझे किसी ने सिखाया ही नहीं । अब मुझे इसी प्रकार रहने की आदत पड़ गई है ।

प्रवक्ता - माता पिता बच्चों के लिए प्रेरणा स्रोत होते हैं । जब आप ही पगड़ी नहीं बांधोगे तो आपके बेटों ने पगड़ी किससे प्रेरणा पाकर बांधनी है, क्या आप अपने घर से सिक्खी को अलविदा कहना चाहते हैं ?

सिंह जी - नहीं जी ! मैं एक श्रद्धावान सिक्ख हूँ । मैं चाहता हूँ कि मेरे घर में रहती दुनियां तक सिक्खी सदैव बनी रहे ।

प्रवक्ता - आप जो चाहते हैं उसकी प्राप्ति के लिए भी तो प्रयत्नशील होना चाहिए । आपको अमृतसर (भगवान पूरे) से तो कोई व्यक्ति पगड़ी बांधने का अभ्यास करवाने आने वाला नहीं । यह कार्य तो आपको स्वयं ही करना होगा । जो लोग अच्छी पगड़ी बांधते हैं उनको पगड़ी बांधते समय देखें और फिर उनकी सहायता प्राप्त कर स्वयं प्रतिदिन पगड़ी बांधने का अभ्यास करें । ऐसा कोई कारण नहीं जो आपकी सफलता में रूकावट बने । बस शर्त यही है कि आपकी इच्छाशक्ति जागृत होनी चाहिए । इस समय आपकी सिंहनी (सुपत्नी) कहाँ है ? उन्हें यहाँ बुलाएं ।

सिंह - कमरे से बाहर विश्राम कर रही है, अभी बुला लाता हूँ ।

सिंहनी - जी कहिये - आप मुझे कुछ कहना चाहते हैं ?

प्रवक्ता - आप यदि चाहे तो क्यों नहीं हो सकता। आपका अधिकार क्षेत्र बहुत बड़ा है । आप सिंह जी को प्रात:काल ही पगड़ी देकर उन्हें बांधने का अभ्यास करने के लिए प्रेरित करें और हर समय उन्हें अहसास दिलवाएं कि आप पगड़ी बिना अधूरे हैं और उन्हें उत्साहित करें कि पगडी आपका ताज है । जब कभी भी इक्ट्ठे बाहर जाने का अवसर प्राप्त हो तो जब तक सिंह जी पगड़ी न बांधे आप उनके साथ बाहर न जाएं । आप का दबाव ही सफलता की कुंजी बन जाएगी ।

एक दिन मैं किसी कार्यवंश बैंक में गया तो वहां एक युवक हाथ में ढाई किलो का हैल्मेट सिर से उतार कर मेरे पिछे खड़ा हो गया । पहली नजर में वह पहचान में नहीं आया। उस के हाव-भाव से मुझे वह मुस्लिम युवक मालूम हुआ । अत: मेंने उससे कौतुहल वश पूछ लिया बेटा तेरा नाम क्या है ? इस पर वह बोला, मेरा नाम सुरेन्दर सिंह है । तब मैंने आश्चर्य में कहा-बेटा जी मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा था कि कोई मुस्लिम युवक गुलाम कादिर अथवा कुदरत तुल्लाह मेरे निकट आया है। सिक्ख तो तुम किसी प्रकार से भी नहीं कहे जा सकते क्योंकि तुमनें अपनी आईडेंटिटी ही खो दी है ! यह सुनकर वह युवक बोला-ज्ञानी जी-मैं सिक्ख युवक ही हूँ । तब मैनें कहा-बेटा जी सिक्ख लोग तो लाखों लोगों में अपने न्यारी वेश भूषा (बाणें) के कारण पहचाने जाते हैं । इस रूप में तुम गुरू के लाल कैसे हो सकते हो ? वह फिर बोला-ज्ञानी जी-वास्तव में मुझे पगड़ी ठीक प्रकार से बंधनी नहीं आती । मैने उत्तर में उसे समझाते हुए कहा-यहां पर बहुत से युवक मौजूद है जो लगभग तेरी आयु के हैं । उन सभी ने पगड़ी बांधी हुई है, क्या उन को भगवान ने चार हाथ दिये हैं जो तुम्हें नहीं मिले या वे तुम से सुपीरियर है? तुम प्रतिभा में किसी से कम हो जो हीरो से ज़ीरो बन कर भटकते फिर रहे हो ।

क्या तुम्हें नहीं मालूम सिंह इज़ किंग होता है ? यह तो तभी सम्भव होगा जब तुम पगड़ी रूपी ताज बांध कर समाज में विचरण करोगे । उस समय तुम हरी सिंघ नलूवा, अकाली फूला सिंघ अथवा शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ के उत्तराधिकारी, उन के सुकुमार सपूत दृष्टिगौचर हो सकते हो ।

प्रवक्ता - एक अन्य युवक से - आपने पगड़ी क्यों नहीं बांधी ?

युवक - बस वैसे ही - नहीं बांधता ।

प्रवक्ता - तुम्हें पगड़ी बांधने के लिए कोई लाईसेंस चाहिए या किसी ब्राह्मण से मुहुर्त निकलवानी है ? किसका इन्तज़ार कर रहे हो ? अगर सिक्ख युवक पगड़ी नहीं बांधेगे तो फिर क्या मुस्लिम (तालिबान) लोग पगड़ी बांधेगे ? अब तुम पूर्ण यौवन पर हो । तुम दूध पीते बच्चे तो हो नहीं जिन्हें यह बताया जाए कि प्रत्येक सिक्ख को घर से बाहर निकलते समय पगड़ी बांधना अनिवार्य है । यह हुक्म गुरूदेव का है । इस बात पर किसी को भी कोई किन्तु परन्तु करने का अधिकार नहीं क्योंकि तुम संत सिपाही हो, सिपाही का केवल आज्ञा पालन में ही भला और कल्याण है ।

हुकम मनीऐ होवै परवाणु ता खसमै का महिल पाइसी।

एक अन्य स्थानीय कमेटी के सदस्य - कृपया ! आपको मीठी वाणी ही प्रयोग करनी चाहिए ।

प्रवक्ता - कुछ एक केसों में कड़वी दवा ही काम करती है । जिन लोगों को मलेरिया बुखार होता है उन्हें कूनीन की गोली देनी ही पड़ती है अर्थात कुछ एक व्यक्तियों की गैरित को ललकारने के लिए व्यंग बाण चलाने आवश्यक हो जाते हैं, जिससे उनकी सोई हुई ज़मीर जाग उठे ।

स्थानीय गुरूद्वारा प्रबन्धक कमैटी के सदस्य आपस में विचारविमर्श करते हुए - इस गम्भीर समस्या का स्थाई हल क्या हो सकता है ?

प्रवक्ता - समस्त सिक्ख जगत, श्री अकाल तख्त के समक्ष निवेदन करे कि वह एक विशेष अध्यादेश जारी करें कि बच्चों को छठी अथवा सातवीं कक्षा से ही पगड़ी बांध कर स्कूल में प्रवेश करने की अनुमति दी जानी चाहिए । इस प्रकार पगड़ी ड्रैस का अनिवार्य अंग बन जाने से लड़कों को किशोरावस्था में ही पगड़ी बांधने का अभ्यास हो जाएगा । तरूणावस्था में परिपक्व संस्कार फिर जीवन भर बने रहते हैं ।

कुछ एक व्यापारियों ने आज की सिक्ख युवा पीढ़ी की कमजोरियों को भांप लिया है । उन्होंने स्थान स्थान पर पगड़ीनुमा टोपी बेचनी शुरू कर दी है जिससे सिक्ख समाज में बहुत भ्रान्तियां उत्पन्न हो गई हैं क्योंकि जन साधारण को गुरमति (सिक्ख आचार संहिता / रहित मर्यादा) का बिल्कुल भी बौद्ध नहीं । इस अनभिज्ञता के कारण ही सिक्ख समाज गुरू आशय से दूर होता जा रहा है । अत: स्थानीय गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटियों को चाहिए कि वह 'रहित मर्यादा' के विशेष-विशेष आदेश स्पष्ट रूप में लिखकर प्रवेश द्वार पर लगावें तथा उन व्यापारियों को चेतावनी दें जो गुरूद्वारा साहब के बाहर खुले आम पगड़ीनुमा टोपी बेचते हैं ।

पतित होने के प्रमुख कारणों में से एक बड़ा कारण यह भी है कि अधिकांश युवकों को पगड़ी बांधनी ही नहीं आती और वह आलस्यमय जीवन जीना चाहते हैं । अत: स्थानीय कमेटियों को चाहिए कि वह अपने यहाँ युवकों को पगड़ी बांधने के लिए प्रेरित करना चाहिए और प्रशिक्षण केन्द्र खोलकर पगड़ी बांधने हेतु प्रशिक्षित करना चाहिए । इसके अतिरिक्त समय-समय पर सुन्दर और तीव्र गति से पगड़ी बांधने की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाये तो इससे युवकों में पगड़ी के प्रति प्रेरणा, उत्साह और प्रेम जागृत होगा । इससे सिक्खी का प्रचार-प्रसार दिन दुगुना रात चौगुना होगा ।- - - -